जनसंपर्क कार्यालय
जामिया मिल्लिया इस्लामिया

24 फरवरी, 2025

प्रेस विज्ञप्ति

जामिया के फारसी विभाग ने की 38वें ऑल इंडिया पर्सियन टीचर्स एसोसिएशन सम्मलेन की मेजबानी

जामिया मिल्लिया इस्लामिया के फारसी विभाग ने 22 से 24 फरवरी, 2025 तक "दिल्ली की फारसी भाषा, साहित्य और संस्कृति की विरासत" पर केंद्रित 38वें ऑल इंडिया पर्सियन टीचर्स एसोसिएशन सम्मलेन की मेजबानी की। सम्मेलन का उद्घाटन समारोह 22 फरवरी, 2025 को विश्वविद्यालय के एफटीके हॉल में हुआ, जिसमें जेएमआई के माननीय कुलपति प्रोफेसर मजहर आसिफ ने कार्यक्रम की अध्यक्षता की।

अपने उद्घाटन वक्तव्य में, ऑल इंडिया पर्सियन टीचर्स एसोसिएशन की अध्यक्ष प्रोफेसर अज़रमी दुख़्त सफ़वी ने एसोसिएशन को मज़बूत करने की ज़रूरत पर ज़ोर दिया और फ़ारसी भाषा एवं संस्कृति की विरासत को आगे बढ़ाने के लिए देशभर के फ़ारसी शिक्षकों के सहयोग का आह्वान किया। उन्होंने फ़ारसी साहित्यिक परंपरा के संबंध में जामिया की महत्वपूर्ण विरासत को भी रेखांकित किया। इसके अलावा, उन्होंने भारत में फ़ारसी साहित्य के इतिहास में फ़ारसी विद्वत्ता के एक प्रमुख केंद्र के रूप में दिल्ली की महत्वपूर्ण भूमिका के बारे में विस्तार से चर्चा की।

भारत में ईरान के राजदूत डॉ. इराज इलाही ने इस अवसर पर मुख्य अतिथि के रूप में शिरकत की। उन्होंने भारत और ईरान के बीच संबंधों को बढ़ावा देने में फ़ारसी भाषा और साहित्य को एक महत्वपूर्ण तत्व के रूप में उजागर किया। उन्होंने फ़ारसी में शिक्षा प्रदान करने के लिए समकालीन तरीकों को अपनाने की ज़रूरत पर ज़ोर दिया। इसके अतिरिक्त, उन्होंने फ़ारसी को एक ऐसी भाषा के रूप में चित्रित किया जो दोनों देशों की पहचान को दर्शाती है।

डॉ. इलाही ने फारसी भाषा, साहित्य और संस्कृति के संरक्षण में भारत की महत्वपूर्ण भूमिका को स्वीकार करते हुए कहा कि फारसी साहित्य के मामले में कोई भी अन्य देश भारत के बराबर नहीं है। उन्होंने इस बात पर जोर दिया कि भारत और ईरान के बीच संबंध बहुत गहरे हैं और हर युग में यह और भी समृद्ध होते रहेंगे। उन्होंने इस बात पर भी संतोष व्यक्त किया कि फारसी को भारत की दस शास्त्रीय भाषाओं में से एक के रूप में मान्यता दी गई है, जिसे प्राथमिक स्तर से पढ़ाया जाना चाहिए।

ईरानी संसद के पूर्व अध्यक्ष, ईरानी भाषा अकादमी के निदेशक और सादी फाउंडेशन, ईरान के अध्यक्ष डॉ. घोलामाली हदाद आदिल की शुभ उपस्थिति ने सम्मेलन के उद्घाटन समारोह को महत्वपूर्ण रूप से समृद्ध किया। उनके ज्ञानवर्धक भाषण ने श्रोताओं को मंत्रमुग्ध कर दिया। अपने संबोधन में उन्होंने भारत और ईरान के बीच अनादि काल से चले आ रहे संबंधों पर चर्चा की। अपने संबोधन के दौरान उन्होंने भारत और ईरान के बीच ऐतिहासिक संबंधों पर चर्चा की और उनके दीर्घकालिक संबंधों पर जोर दिया। इसके अलावा, उन्होंने फारसी भाषा के अध्ययन के महत्वपूर्ण महत्व पर प्रकाश डाला और कहा कि ज्ञान और बुद्धि की उन्नति के लिए इस तरह का अध्ययन आवश्यक है। उन्होंने भारत में फ़ारसी की साझी साहित्यिक और सांस्कृतिक विरासत के संरक्षण के संबंध में शिक्षकों और विद्वानों के साथ विभिन्न अंतर्दृष्टि साझा की।

जामिया के माननीय कुलपति प्रो. मजहर आसिफ ने भारत में फारसी भाषा, साहित्य और संस्कृति के व्यापक प्रभाव पर प्रकाश डाला। उन्होंने कहा कि भारत की समग्र संस्कृति फारसी की बहुत ऋणी है

और इसलिए उन्होंने छात्रों को मानवता की खातिर फारसी साहित्य का अध्ययन करने के लिए प्रोत्साहित किया।

कार्यक्रम के दौरान माननीय कुलपति प्रो. मजहर आसिफ ने 'दारा दर्पण' नामक एक शोध पत्रिका का भी उद्घाटन किया ।

कार्यक्रम का समापन फारसी विभाग के अध्यक्ष और सम्मेलन के स्थानीय सचिव प्रो. कलीम असगर द्वारा धन्यवाद ज्ञापन के साथ हुआ। उन्होंने भारत और विदेश से आए सभी मेहमानों का आभार व्यक्त किया। उन्होंने प्रायोजकों का, खासकर एनसीपीयूएल के सहयोग के लिए आभार व्यक्त किया। उन्होंने जामिया में सम्मेलन के आयोजन में सभी तरह का सहयोग प्रदान करने के लिए जामिया के माननीय कुलपति और विश्वविद्यालय प्रशासन के प्रति भी आभार व्यक्त किया।

जनसंपर्क कार्यालय
जामिया मिल्लिया इस्लामिया